प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) के पश्चात वैश्विक परिदृश्य में महत्वपूर्ण सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और तकनीकी परिवर्तन हुए। यह युद्ध विश्व की प्रमुख शक्तियों के लिए अत्यंत विनाशकारी सिद्ध हुआ और इसके परिणामस्वरूप नई विचारधाराओं, राजनीतिक व्यवस्थाओं तथा आर्थिक परिवर्तनों का जन्म हुआ।

1. राजनीतिक परिवर्तन

- संघर्ष और क्रांतियाँ: युद्ध के बाद रूस में बोल्शेविक क्रांति (1917) के तहत समाजवादी शासन स्थापित हुआ, जिससे पूरे विश्व में साम्यवाद और पूंजीवाद के बीच संघर्ष बढ़ा।
- नए राष्ट्रों का उदय: ऑस्ट्रो-हंगेरियन, ओटोमन और जर्मन साम्राज्य के विघटन से कई नए देश अस्तित्व में आए, जैसे पोलैंड, हंगरी, चेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया आदि।
- लीग ऑफ नेशंस **(1920):** विश्व शांति बनाए रखने के लिए राष्ट्रसंघ (League of Nations) की स्थापना हुई, हालांकि यह द्वितीय विश्व युद्ध को रोकने में असफल रहा।

2. आर्थिक प्रभाव

- अमेरिका का उदय: यूरोपीय शक्तियाँ कमजोर पड़ीं और अमेरिका एक प्रमुख आर्थिक शक्ति बनकर उभरा।
- महामंदी **(1929):** युद्ध के बाद की अस्थिरता और बढ़ते ऋण ने 1929 की आर्थिक महामंदी (Great Depression) को जन्म दिया, जिससे वैश्विक अर्थव्यवस्था प्रभावित हुई।
- युद्ध से प्रभावित अर्थव्यवस्था: यूरोप के कई देश भारी कर्ज और आर्थिक असंतुलन से जूझ रहे थे, जिससे उनके उद्योग और व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

3. सामाजिक प्रभाव

- स्त्री अधिकारों में वृद्धि: युद्ध के दौरान महिलाओं ने विभिन्न कार्यक्षेत्रों में योगदान दिया, जिससे कई देशों में उन्हें मतदान का अधिकार मिला (ब्रिटेन - 1918, अमेरिका - 1920)।
- जनसंख्या पर प्रभाव: भारी जनहानि हुई, जिससे यूरोप की जनसंख्या में भारी कमी आई और पुनर्निर्माण की आवश्यकता बढ़ी।
- संस्कृति और विचारधारा में बदलाव: युद्ध ने कला, साहित्य और दार्शनिक सोच को प्रभावित किया। अस्तित्ववाद (Existentialism) और निराशावाद (Pessimism) जैसी विचारधाराएँ प्रबल हुईं।

4. तकनीकी और वैज्ञानिक विकास

- युद्ध से प्रेरित नवाचार: प्रथम विश्व युद्ध के दौरान हवाई जहाज, टैंक, रेडियो संचार और चिकित्सा विज्ञान में नए प्रयोग हुए, जिनका शांतिकाल में भी उपयोग हुआ।
- उद्योगों का आधुनिकीकरण: युद्ध के दौरान बढ़ी उत्पादन क्षमता ने ऑटोमोबाइल, विमानन और इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योगों के विकास को गति दी।

5. उपनिवेशवाद और स्वतंत्रता आंदोलन

- उपनिवेशों में असंतोष: युद्ध के दौरान उपनिवेशों ने बड़ी संख्या में सैनिक और संसाधन प्रदान किए, लेकिन उन्हें बदले में स्वायत्तता नहीं मिली, जिससे स्वतंत्रता आंदोलनों को बल मिला।
- भारत और अन्य देशों में प्रभाव: भारत में 1919 का जलियांवाला बाग हत्याकांड और 1920 का असहयोग आंदोलन ब्रिटिश शासन के प्रति असंतोष का संकेत थे।

निष्कर्ष

प्रथम विश्व युद्ध के बाद की दुनिया राजनीतिक अस्थिरता, आर्थिक चुनौतियों और सामाजिक बदलावों से गुजरी। इस अवधि में लोकतंत्र, साम्यवाद और अधिनायकवाद (Totalitarianism) जैसी विचारधाराओं का टकराव देखने को मिला। यह समय द्वितीय विश्व युद्ध (1939-1945) के लिए भी पृष्ठभूमि तैयार कर रहा था।